सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 158

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 36
सितम्बर – 2017

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

विजया–दशमी–श्री साई शके 36 शुभारंभ

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

गुरूबंधुभगिनियों से

आज के शुभ अवसर पर विजया दशमी के दिन श्री साई शके 36 का शुभारंभ हो रहा है। तथा प.पू. बाबा को समाधिष्ठ हुए 100 साल पूर्ण हुए, यह साल हम सभी गुरुभक्तों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस साल ही श्री जगतगुरु साईनाथ महाराज 1918 में शिरड़ी में देह छोड़, त्रैलोक्य वासी हुए थे; ऐसे सौ साल पूरे होने वाले है। इसी के साथ यह साल श्री शक्तिपीठ स्थापना एवं श्री साईशक प्रतिमा की सिद्धता को, तीन तप (36 साल) पूरा करने वाला यह साल है। 1982 में विजया दशमी के शुभ अवसर पर वं. दादाजी ने श्री साईशक 1 का, उद्घोष (जय जय कार) कर, इस कार्य को "साई" यानी भाई भाई, मतलब विश्वबंधुत्व का संकल्प लेकर अपने गुरु के नाम का शक आरंभ किया था।

इसी साल (1983 में) श्री साई शक 1 में चैत्र प्रतिपदा के दिन श्री शक्ति पीठ स्थापित कर यह कहा था कि, " आज से आप सभी भक्तों को शक्ति से जोड़ रहा हूँ, जिस शक्ति की मैंने (वं. दादाजी ने) अब तक उपासना की। यानी अब से मैं आपका गुरु नहीं बल्कि हम सब एक ही गुरु शक्ति के उपासक है। गुरुमार्ग में यह कार्य हर एक गुरु को करना पड़ता है क्योंकि व्यक्ति पूजन का महत्व गुरुमार्ग में न रख कर शक्ति पूजन अग्र स्थान पर रहता है। कोई भी व्यक्ति गुरुकार्य से/ गुरुमार्ग से बड़ा नहीं होता। गुरुमार्ग में सबसे बड़ी गुरु शक्ति होती है। मनुष्य का स्वभाव इस तरह होता है कि उसे अपना सामर्थ्य जताने की इच्छा रहती है और कार्य पीछे हो जाता है लेकिन गुरुमार्ग में हमेशा शक्ति को अग्रस्थान पर रखकर कार्य करना जरूरी है।

श्री शक्तिपीठ स्थापना के बारह साल बाद 1995 में तपोपूर्ती उत्सव संपन्न हुआ तब सभी को शक्ति पीठ पर बुलाकर साधन किया गया जिससे गुरुशक्ति को सौम्यरूप देकर इसे वातावरण में कार्यान्वित किया गया। जब वातावरण की आध्यात्मिक स्वरूप से शुद्धता होने लगी तब दूसरे तप के दौरान अगर हम गोर से सोचे तो याद आयेगा कि भारत में लोगों की आमदनी काफी गुना बढ़ गयी। यानी जब समाज की अशुद्धता दूर होती है, विमोचन आसानी से होने लगते है तो सबसे पहले आर्थिक परिस्थिति में सुधार आता है।

इसके पश्चात आध्यात्मिक तत्वज्ञान प्राप्त कर समाधान अवस्था की ओर जाने के बजाए समाज ने विज्ञान में बहुत ज्यादा और गतिमान उन्नति की जिसके कारण पिछले बारह वर्षों में समाज यंत्रो के आधीन हो गया। जो उन्नति सौ साल में होनी चाहिए थी वह 10–15 साल में होने की वजह से आज समाज समाधान अवस्था से और दूर चला गया।

1981 में श्री साईनाथ महाराज जी ने ऐसा संदेश दिया था कि, ''मानवीय जीवन यह ईश्वर निर्मित यंत्र है। मानव ने खुद को आराम मिले इसलिए और यंत्रों की निर्मिती की। उन यंत्रों में से और नए यंत्र बने। लेकिन उस वजह से मानव का मन (अंतरात्मा) यंत्रों में चला गया और वह मानव परतंत्र में (यंत्रों में) चला गया। इससे अब बाहर निकलने के लिए जो भी यंत्र मानव ने निर्माण किए, उन्हें वापस बुलाना है और उस मानव को मंत्र सिखाना है, तभी आप जगत में शांति निर्माण कर सकेंगे।''

इस संदेश का अर्थ आज 36 साल बाद ज्ञात हो रहा है। विज्ञान ने पिछले 10–15 सालों में सैंकड़ो नई खोज की, हर दिन उसमें बढ़त हो रही है और उसकी वजह से मनुष्य अधिकाधिक (ज्यादा से ज्यादा) भौतिक सुखों के आधीन हो कर आत्मिक सुखों से दूर जा रहा है। मानव द्वारा अनेक खोज करने के बाद भी मानवीय जीवन यह क्या संपत्ति है, इसकी खोज अभी तक नहीं हुई है। इसीलिए आज अनगिनत भौतिक सुख पाकर भी मानवीय जीवन में समाधान नहीं है। क्योंकि आत्मिक बाजु अभी भी अविकसित रह गई है।

श्री सद्गुरुनाथ दादा आध्यात्मिक विषय के महान शास्त्रज्ञ है। श्री साईनाथ महाराजजी के मार्गदर्शन में उन्होंने आध्यात्मिक मार्ग का जो अध्ययन किया, उतना शायद ही और किसी ने किया होगा। आज हम विमोचन, दीक्षा, ॐकार साधना, प्रतिमा, शक्तिपीठ, कामकाज, मुलाकात, आरती आदि शब्द सहजता से बोलते है। लेकिन इसमें से हर एक साधन की सिद्धता के लिए वंदनीय दादाजी का अध्ययन, परिश्रम त्याग, मेहनत, आदि शायद ही हम समझ पायेंगे। वंदनीय दादाजी ने गुरु मार्गदर्शन से मानवीय जीवन एवं उसके सिद्धांतों का खगोल अध्ययन किया (Discovery) और फिर आज का मानवीय जीवन भविष्य में आसानी से किस तरह विकसित कर सकते हैं, यह सोच कर गुरुकृपाशीर्वाद से साधन सिद्धता की (Invention)। इसलिए वह आध्यात्म के महान शास्त्रज्ञ थे। जो उच्च आध्यात्मिक अवस्था उन्हें प्राप्त हुई थी उसका सामर्थ्य न जताते हुए उन्होंने गुरुमार्ग को नई दिशा दी और जगत में सभी को आसानी से समझ में आए ऐसा तत्वज्ञान बताया और एक श्रेष्ठ गुरुमार्ग सिद्ध कर हमारे सामने रखा।

हम अपने परिवार के प्रापंचिक दुखों की वजह से वंदनीय दादाजी का गुरुकृपाशीर्वाद लेने के लिए इस मार्ग में आए। कुछ सवाल हमारे खत्म हुए होंगे और शायद आज भी कुछ बाकी रहेंगे, लेकिन आने वाले हर एक व्यक्ति को अपने जीवन का पूरी तरह ज्ञान हो और वह अंधश्रद्धा से नहीं बल्कि पूरी

श्रद्धा से श्री साईनाथ महाराज जी की शरण जाकर खुद का विकास प्राप्त करे और खुद के और विश्व के काम आ सके, यही संकल्प वंदनीय दादाजी ने इस गुरुमार्ग में रखा।

आज जीवन में हमें खाना–पीना, कपड़ा–लत्ता इन चीजों की खैरात हो गई तो भगवान प्रसन्न हुआ या गुरुकृपा हो गई, ऐसा हम समझते है। लेकिन हमारी अपेक्षा से ज्यादा सुख प्राप्त हुआ तो गुरुकृपा हुई ऐसा नहीं है, बल्कि जितना आवश्यक हो उतना ही सुख और वाकी का जीवन सेवा करने में व्यतीत हो सके इस प्रकार का लाभ प्राप्त होना यानी सही मायने में जीवन में गुरुकृपा का लाभ होना है। क्योंकि जो सुख हम मांगते है उसे यही छोड़ कर जाना है। मरने के बाद हमारे जीवन में क्या बाकी रहने वाला है यह सवाल अगर हम अपने आपसे करें तो इस जीवन का प्रश्न ही सुलझ जाएगा, नहीं तो जीवन की दिशा अनिश्चित हो जाएगी। अगला जन्म इस जन्म के कर्म पर निर्भर करता है और आज प्राप्त हुआ जन्म पिछले जन्म पर निर्भर है। एक जन्म के बाद दूसरा जन्म प्राप्त करने के लिए कम से कम 360 साल लगते है। आज का जन्म हमें जिस जन्म की वजह से प्राप्त हुआ है, वह सैकड़ो साल पुराना है। उस समय के आचार–विचार आज नहीं है। आज के अपने भिन्न आचार–विचारों की वजह से पिछले जन्म का कर्म आज कार्य करने के लिए तकलीफ महसूस करता है। आज के कार्य के लिए उसे पूर्णावस्था नहीं मिलती उसी को हम प्रतिकूल कर्म कहते है। इसी की वजह से समाधान अवस्था की कमी हमें आस पास, समाज में, पूरे जगत में दिखाई देती है। वास्तविक स्वरूप में कर्म अनुकूल नहीं होता तो हमें जन्म प्राप्त नहीं हो पाता। कर्म में अगर बुराई होती तो ईश्वर ने हमें इस धरती पर जन्म ही नहीं दिया होता। अगर आज सभी लोगों का कर्म अच्छा है तो सबका जीवन अच्छा, समाधानी क्यों नहीं है? इसका उत्तर यह है कि, ''गत जन्म का काया,वाचा, मन और इस जन्म का काया,वाचा, मन ये समान नहीं है। गत जन्म में 'मन' प्रधान थे और इस जन्म में 'काया' प्रधान हो गई है। आज मनुष्य को दुख कितना है और उसमें अज्ञान कितना है यह सोचने वाली बात है।

इस मनुष्य जीवन की प्राप्त अवस्था का वं. दादाजी ने अध्ययन करने के बाद प.पू. जगतगुरु श्री साईनाथ महाराज जी ने आज्ञा दी कि ''कार्य इस प्रकार होना चाहिए कि इस जगत का जीवन जीने का मूलभूत धर्म बदलना जरूरी है। उसी आज्ञानुसार वं. दादाजी ने हमें यह गुरुमार्ग प्रदान किया है। जिसमें पीढ़ी दर पीढ़ी चलते आने वाला औपचार नहीं है बल्कि आज के जीवन में सुलभता से कर सके ऐसी 35 मिनट की ॐकार साधना है, जो कि वंदनीय दादाजी के कहे अनुसार अपने हर एक दिन का सबसे बड़ा सत्कर्म है। अगर सिर्फ यही सत्कर्म हम हर दिन करके बाकी समय परमार्थ प्रश्नावली में दिए नियमानुसार आचरण करने की कोशिश करेंगे तो अनेक सत्कृत्य श्री गुरु हमारे माध्यम से हमारे जाने अंजाने में कर लेंगे। यही उन्होंने सोचा हुआ महान कार्य हमें अपने शेष जीवन में करना जरूरी है। आज तक गुरु शक्ति ने हमें संभाला है आज यह सोचने का अवसर आया है कि हम अपने आचार–विचार–उच्चारों से क्या हम में धारण हुई गुरुशक्ति को संभाल सकते है?क्या हम उस शक्ति को अपने अंदर वृद्धिगत कर सकते है? जगत में जो भी कोई जन्म को आता है, उसके जन्म का कोई न कोई कारण होता है। कारण के बिना इहलोक में न कोई आयेगा न कोई जाएगा। इस कारण को पहचान कर उसके लिए हर एक को अपना जीवन व्यतीत करना है। आज हम सब इस गुरुमार्ग में हैं यानी हमें ईश्वर ने उसके कार्य के लिए चुना है और हमारे जीवन का एक भाग हमें गुरुकार्य के लिए देना है। मतलब गुरुशक्ति धारणा के लिए हमें हर रोज ॐकार साधना करनी है और धारण हुई गुरुशक्ति, गुरु हमारे माध्यम से कार्यान्वित कर विश्व के काम के लिए उपयोग करे उनके इस संकल्प को बाधित कर सके, ऐसे

हमारे आचार, उच्चार और विचारो पर हमें संयम रखना है। हमारे आचार–विचार–उच्चारों से गुरुशक्ति प्रवाहित हो यही गुरु कार्य है और वह हमारे जाने अंजाने में हो रहा है। उसे ज्यादा अवसर देना यह प्रयत्न हमें करना है।

इस गुरुकार्य की व्याप्ती बताते हुए वंदनीय दादाजी ने श्री शक्तिपीठ स्थापना के दौरान कहा था कि एक व्यक्ति का कार्य उस व्यक्ति के जन्म से मृत्यु तक होता है लेकिन शक्तिपीठ स्थापित कर, प्रतिमा देने के बाद यह कार्य कोई एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहा बल्कि वह गुरु–गुरुओं की 2500 सालों की परंपरा तक पहुँच गया। इस कार्य में दत्त, नाथ, सूफी संतों की आवश्यक सिद्धता है और वह कार्य करने वाले के माध्यम से कार्यान्वित होती रहेगी। आगे वंदनीय दादाजी ने कहा कि, विश्व में अनगिनत शक्तियाँ है। कई अच्छी शक्तियाँ वलय रूप में पृथ्वी के आस पास भ्रमण करती रहती है। उन अच्छी शक्तियों में से केवल 10 प्रतिशत शक्तियों का लाभ लेकर मानव और निसर्ग पृथ्वी पर जी रहे है। बाकी बची 90 प्रतिशत शक्तियों को आवाहनित करके कार्यान्वित करने के लिए वंदनीय दादाजी ने शक्तिपीठ स्थापना एवं ॐकार साधना की सिद्धता की। खुद अनेक कष्ट सहकर भी जब यह कार्य साकार हुआ तब श्री शक्तिपीठ स्थापना के दौरान प.पू. हाजी मलंग बाबा ने उपस्थित गुरुभक्तों से एक वचन लिया था। आज के शुभ अवसर पर जब श्री साईनाथ महाराज जी का शताब्दी महोत्सव और वं. दादाजी ने विश्व बंधुत्व प्रस्थापित करने के उद्देश्य से शुरु किया हुआ श्री साई शक तीसरा तप इस साल पूरा होने जा रहा है, तब हम सभी गुरुभक्त, प.पू.हाजी बाबा के दिए हुए उसी वचन का संकल्प करे, ''हम सभी गुरुभक्त, आपको आज ऐसा अभिवचन दे रहे है कि, जिस प्रकार आपने हमें खुले दिल से जो कुछ भी दिया है जिसकी तुलना जगत के किसी भी चीज से नहीं हो सकती, इस प्रकार का प्रेम, इस प्रकार की शक्ति, ऐसी यह संपत्ति, आदि हमारे माध्यम से भी उसी प्रकार खुले दिल से, सहजता से, ईमानदारी से पूरे विश्व में प्रवाहित हो।'' इस प्रकार का वर्ताब हमारे काया, वाचा, मन से सदैव हो सके यही प.पू. श्री जगतगुरु साईनाथ महाराज, श्री सदगुरुनाथ दादा एवं सभी दिव्य पुण्य विभूतियों के चरणों में प्रार्थना।

इसमें एक बात का और जिक्र करना बहुत जरूरी है जोकि हाजी हज़रत ख्वाजा बंदेनवाज, गुलबर्गा साहब ने 17 अक्टूबर 1991 को वं. दादाजी के माध्यम से कही थी वह भी विजयदशमी का दिन था। उस दिन श्री साई आध्यात्मिक समिति की स्थापना के 36 साल पूरे हुए थे।

''श्री साई आध्यात्मिक समिति का शुभारंभ आज हो रहा है आप तमाम लोग इसका ख्याल रखिए कि कलम खोलना आसान है, निभाना बहुत मुश्किल है। कलम इस शब्द के दो अर्थ है कलम यानी लेखनी (pen) कलम यानी ईश्वरीय वचन। ईश्वर का वचन या इच्छा अलौकिक होगी, इसलिए जिस कलम से उसे लिखा जाएगा वह आगे जाकर ''शिलालेख'' माना जाएगा। यद्यपि यह सही है कि मानवीय जीवन में शिलालेख लिखना आसान नहीं है। ऐसा इस निवेदन तथा हर वाक्य का अर्थ है।

यह गुरुवाणी है पंथ महाराज की एक आरती है –

सत्य वचन तू भक्त अभिमानी
दत्ताची तूचि आधार।।

आइए वंदनीय दादाजी के चरणों में ऐसी प्रार्थना करें कि आपके समान गुरु का इस जन्म में लाभ होना इससे अधिक बड़ा भाग्य हो ही नहीं सकता।

।। शुभं भवतु।।

गुरू सेवक